आगे-पीछे की सुध लेना *

दुव्वुरी सुब्बाराव

हम यहां पर भारतीय रिज़र्व बैंक की प्लैटिनम जुबली के भव्य समापन के अवसर पर एकत्रित हुए हैं।

मेरे लिए यह खुशी और सौभाग्य की बात है कि मुझे-

- माननीय प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह
- माननीय वित्त मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी
- महामहिम महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री के. शंकरनारायणन, और
- माननीय महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री अशोक चव्हाण, का स्वागत करने का अवसर मिला है।

2. खुशी के अवसर पर उपस्थित श्रीमती गुरशरण कौर, जो माननीय प्रधान मंत्री के साथ आई हैं, भारतीय रिज़र्व बैंक के पूर्व गवर्नर और उप गवर्नर तथा उनकी पत्नी/पति का भी मैं हार्दिक स्वागत करता हूं

3. और हमारे सभी मेहमानों - वित्तीय क्षेत्र के हमारे साथियों, हमारे मित्रों और शुभचिंतकों, हमारे पूर्व और वर्तमान स्टाफ का भी तहेदिल से स्वागत करता हूं, जो हमारे साथ यह उत्सव मनाने के लिए यहां एकत्रित हुए हैं।

रिज़र्व बैंक के 75 साल

4. संस्थाओं के रूप में केंद्रीय बैंकों का इतिहास कई सदियों पुराना है। लगभग 350 वर्षों पहले 1668 में स्वीडन में पहला केंद्रीय बैंक 'रिक्सबैंक' स्थापित किया गया था, उस समय भारत का अधिकांश हिस्सा महान् मुगलों के अधीन था। इसके थोड़े समय बाद 1694 में बैंक ऑफ़ इंगलैंड स्थापित हुआ। 19वीं शताब्दी के अंत तक केवल 18 केंद्रीय बैंक थे। आज लगभग 180 केंद्रीय बैंक हैं जिनमें गत एक सौ वर्षों में दस गुणा वृद्धि हुई है।

5. भारत में केंद्रीय बैंक की स्थापना के लिए बौद्धिक औचित्य का प्रस्ताव जेम्स विल्सन, जो 1860 में इकॉनॉमिस्ट के पहले संपादक थे और 1913 में जॉन मेनॉर्ड कीन्स जैसे

* 1 अप्रैल 2010 को राष्ट्रीय नाट्य कला केंद्र, मुंबई में भारतीय रिज़र्व बैंक की प्लैटिनम जुबली के भव्य समापन समारोह में भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर डॉ. दुव्वुरी सुब्बाराव का स्वागत संबोधन।

भारतीय रिज़र्व बैंक की प्लैटिनम जुबली का भव्य समापन समारोह

आगे-पीछे की सुध लेना

दुव्वुरी सुब्बाराव

महान व्यक्तियों द्वारा रखा गया था। तथापि इसके बाद भी कई वर्षों तक यह विचार वास्तविकता में नहीं बदल पाया। रिज़र्व बैंक वर्ष 1935 में 'सिटी ऑफ जॉय', जो उस समय कलकत्ता के नाम से जाना जाता था, में निजी शेयरधारकों के बैंक के रूप में अस्तित्व में आया था। 1937 में यह बम्बई, इस महान शहर का तत्कालीन नाम, में आ गया और 1949 में इसका राष्ट्रीयकरण किया गया। रिज़र्व बैंक की गत 75 वर्षों की यात्रा उपलब्धियों से भरी हुई है, जिसनें न केवल बौद्धिक विकास को नया रूप दिया, बल्कि देश की आर्थिक नीति के क्षेत्र में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त किया।

6. रिज़र्व बैंक की 75 वर्षों की यात्रा में अनेक ऐतिहासिक घटनाएं, देश और विदेश, दोनों जगह घटी हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तीस के दशक की महान मंदी; दूसरा विश्व युद्ध और इसके परिणामस्वरूप युद्ध के लिए वित्तपोषण की चुनौतियां; 1944 में ब्रेटन वुड्स प्रणाली की स्थापना; सत्तर के दशक में स्वर्ण मानक को सुलझाना और तेल मूल्य का सदमा; अस्सी के दशक में तीसरा विश्व ऋण संकट; नब्बे के दशक के मध्यम में एशियाई संकट और हाल में वैश्विक वित्तीय संकट के परिणाम भुगते।

7. घरेलू मोरचे पर भी ऐतिहासिक घटनाएं घटीं और ये भिन्न-भिन्न प्रकार की थीं जिनमें पंचवर्षीय योजनाएं शुरू करना और आर्थिक विकास के क्षेत्र में इतिहास के सर्वाधिक महत्वाकांक्षी एवं अतिविशाल प्रयोगों से उत्पन्न चुनौतियों से लेकर साठ के दशक में दो युद्धों के बाद के प्रभाव; 1966 में रुपये का अवमूल्यन; 1969 में बैंकों का राष्ट्रीयकरण; नब्बे के दशक के प्रारंभ में भुगतान शेष का संकट और बाद में लीक से हटकर आर्थिक सुधारों ने भारत को नये आर्थिक युग में ला खड़ा कर दिया। इन घटनाक्रमों को आकार देने में या उनका मुकाबला करने में, जो भी स्थिति हो, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा निभाई गई भूमिका के लिए इसको गर्व है लेकिन हमेशा संवेदनशीलता और सत्यनिष्ठा के साथ।

भारतीय रिज़र्व बैंक का नेतृत्व

8. रिज़र्व बैंक की जो आज उच्च प्रतिष्ठा है, उसमें इसके स्टाफ की सक्षमता और व्यावसायिकता, इसके संस्थागत मूल्य और संस्कृति तथा महत्वपूर्ण बात यह है कि आज तक बने 21 पूर्व गवर्नरों के उत्कृष्ट नेतृत्व की बड़ी भूमिका है।

9. गुरुत्वाकर्षण के नियम के लिए जब सर इसाक न्यूटन की तारीफ़ की गई थी तो उन्होंने अपने मित्र और प्रतिद्वंद्वी रॉबर्ट हुक को बहुत ही विनम्र शब्दों में कहा था कि यदि उसने थोड़ी आगे की बात देखी है तो वह इसलिए क्योंकि उसे विशाल कंधों का सहारा था। मैं उस कथन से स्वयं को बिल्कुल जोड़ सकता हूं। ऐसे उद्दीप्त समय में रिज़र्व बैंक के गवर्नर के रूप में मैं रिज़र्व बैंक के पूर्व गर्वनरों की बौद्धिक प्रतिष्ठा का अत्यधिक आभारी हूं। इस प्लैटिनम जुबली के अवसर पर उन सब 21 गवर्नरों की प्रशंसा करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। हमारे पूर्व गवर्नरों में से चार - डॉ. मनमोहन सिंह, डॉ. (या मैं उन्हें प्रोफेसर कहना अधिक उचित समझता हूं) सी. रंगराजन, डॉ. बिमल जालान और डॉ. वाई.वी. रेड्डी आज खुशी के इस अवसर पर हमारे साथ हैं। श्री एम. नरसिम्हन और श्री एस. वेंकटरमण मुंबई नहीं पहुंच पाये लेकिन उन्होंने इस समारोह के लिए अपनी शुभकामनाएं भेजी हैं।

प्लैटिनम जुबली समारोह

10. जैसाकि आपने अभी फिल्म की झलकी में देखा है, गत एक वर्ष के दौरान हमने प्लैटिनम जुबली को भिन्न-भिन्न तरीके से मनाया है। हमारे आयोजनों की प्रमुख बात, जिसका सर्वाधिक स्थायी मूल्य होगा, वह है दूरस्थ स्थानों तक पहुंचने का कार्यक्रम। दूरस्थ स्थानों तक पहुंचने के कार्यक्रम का मुख्य ध्येय वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता के दोहरे स्तंभों को आगे बढ़ना था। संस्था के रूप में भारतीय रिज़र्व बैंक के लिए इस साहसिक कार्य को

करने के पीछे प्रेरणा देश के आम लोगों से जुड़ने की थी। इस यात्रा में हम सभी- हमारे उप-गवर्नर, कार्यपालक निदेशक और मैं स्वयं देशभर के गाँवों में गये, विशेषकर मुख्य रोडों से अंदर, शहरी प्रभाव से दूर, बैंकविहीन गाँवों का दौरा यह देखने और समझने के लिए किया कि आधारभूत संस्थाएं, स्वयं-सहायता महिला समूह, सूक्ष्म वित्त संस्थाएं, गैर-सरकारी संगठन, ग्रामीण सहकारिताएं, क्षेत्रीय और मुख्य वाणिज्यिक बैंकों की ग्रामीण शाखाएं कैसे परिचालित करती हैं तथा ग्रामीण भारत की आशाएं और आकाक्षाएं सीधे तौर पर उनसे सुनना था। साथ ही हमें भी लोगों को यह बताने का अवसर मिला कि भारतीय रिज़र्व बैंक क्या करता है और उनके दैनिक जीवन को छूने के लिए हम क्या और कैसे करते हैं।

11. मैं यह दावा कर सकता हूं और असल में गर्व के साथ करता हूं कि हमने देश के प्रत्येक राज्य और अधिकांश संघ शासित क्षेत्रों के कम से कम एक गाँव का दौरा किया। यह मानते हुए कि भारत में 6,00,000 गाँव हैं, हमारा व्याप्ति क्षेत्र निशिचित से नगण्य है। फिर भी यह एक अदभुत अनुभव रहा, जो बौद्धिक रूप से लाभप्रद, भावात्मक रूप से अनुकूल और व्यावसायिक रूप से समझ बढ़ाने वाला रहा है।

12. कई राज्यों में दूरस्थ स्थानों पर पहुंचने के मेरे स्वयं के दौरे के दौरान मैं स्वयं-सहायता महिला समूह के आत्म-विश्वास, शिक्षा और बेहतर जीवन स्तर के लिए उनकी बढ़ती आकांक्षाओं के लिए ग्रामीण लड़कियों के उत्साह से मैं प्रभावित हुआ। दूरस्थ स्थानों तक पहुंचने का कार्यक्रम कई प्रकार से भारतीय रिज़र्व बैंक की नीतियों को तैयार करने और कार्यान्वयन के लिए वास्तविक रूप से जांच करने वाला रहा है और इसने वित्तीय समावेशन की चुनौतियों को दूर करने और अवसर उत्पन्न करने के हमारी संस्थागत प्रतिबद्धताओं को प्रबलित किया है।

13. दूरस्थ स्थानों तक पहुंचने के कार्यक्रम के हिस्से के रूप में वित्तीय साक्षरता के संदेश को फैलाने और भारतीय रिज़र्व बैंक की भूमिका तथा जिम्मेदारियों के बारे में बताने के लिए देश के विभिन्न भागों में स्कूलों और कॉलेजों में हमने प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं एवं वाद-विवाद कार्यक्रम भी आयोजित किये। इसके अलावा, रिज़र्व बैंक के शीर्ष प्रबंधन ने कस्बों के कुछ कार्यक्रमों में सहभागिता की, जिन्हें टेलीविजन पर प्रसारित किया गया, इनमें आम जनता ने अपने सवाल पूछे। विचार वही भारत के बढ़ते मध्यम वर्ग की चिंताओं को समझना और इसके बाद उन्हें भारतीय रिज़र्व बैंक को स्पष्ट रूप से बताना था।

भावी चुनौतियां

14. प्लैटिनम जुबली कालानुक्रमिक मील का पत्थर, समारोह मनाने का अवसर है लेकिन यह आत्मविश्लेषण करने का भी अवसर है। लोग मुझसे प्रायः रिज़र्व बैंक के समक्ष चुनौतियों के बारे में पूछते हैं - अगले कुछ वर्षों में मैं इसे कहां देखना चाहूंगा। मैं अत्यधिक सचेत हूं कि यह संगोष्ठी नहीं है। अतः मैं केवल चार ऐसे क्षेत्रों पर प्रकाश डालना चाहूंगा, जिनका भविष्य में रिज़र्व बैंक को निवारण करना है।

15. मैं रिज़र्व बैंक के लिए पहली चुनौती मानता हूं - वैश्वीकृत हेते माहौल में आर्थिक और विनियामक, दोनों नीतियों का प्रबंध करना सीखना। हाल के वैश्विक वित्तीय संकट ने वैश्वीकृत होती दुनिया में बृहत्आर्थिक प्रबंध की अनिश्चितताओं और असमंजस को स्पष्ट रूप से निरूपित किया है। यहां तक कि सरकारों और केंद्रीय बैंकों ने नीतिगत बल के असाधारण प्रदर्शन वाला कार्य किया, उन्होंने पाया कि वे घरेलू नीतिगत कार्यों की तुलना में वित्तीय प्रणाली और सीमा-पारीय बाह्यता की अंतर-संबद्धता के कारण स्थिति को नियंत्रण में लाने में असमर्थ थे। सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह था कि भावनाएं और विश्वास दुनियाभर के देशों में असाधारण रूप से सहसंबद्ध थे।

16. अनुभव से पता चलता है कि बाह्य घटनाएं घरेलू बृहत्आर्थिक कारकों के साथ जटिल, अनिश्चित और चंचल

रूप में परस्पर क्रिया करती हैं। जैसे जैसे भारत शेष दुनिया के साथ धीरे-धीरे एकीकृत होता जायेगा, वैसे-वैसे हमारी नीतियों के परिणाम हमारी सीमाओं के पार क्या होता है, उससे प्रभावित होते जायेंगे। अतः भारतीय रिज़र्व बैंक के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह वैश्वीकृत हो रहे माहौल में नीति निर्माण में विशेषज्ञता हासिल करे। वास्तव में वैश्वीकरण एक तरफा रास्ता नहीं है। भारत में जो होता है उसका प्रभाव भी शेष दुनिया पर पड़ना आरंभ हो गया है। एक दिन का ब्लूमबर्ग का मुख्य समाचार मुझे याद है जिसमें लिखा था, ''अमेरिकी शेयरों में गिरावट हुई, क्योंकि भारत ने 2008 के बाद पहली बार दरें बढ़ाई हैं.''।

17. भारतीय रिज़र्व बैंक के समक्ष चुनौतियों या बल्कि लक्ष्यों की सूची में दूसरी बात है - इसे अपने आप को ज्ञान प्रदान करने वाली संस्था के रूप में पुनःस्थापित करना। वैश्विक वित्तीय संकट ने वित्तीय क्षेत्र के विशाल आकार और भयंकर जटिलता को प्रभावशाली ढंग से प्रकट कर दिया है। कुछ लोगों ने संकट से पहले वित्तीय क्षेत्र को शुम्पेटेरियन-विरोधी ''विनाशकरी सृजन'' के रूप में वर्णित किया था। अब चूंकि संकट हट गया है, अतः गहन बौद्धिक मंथन हो रहा है और हम, जैसाकि अधिकांश लोगों को आशा और विश्वास है, शूम्पेटेरियन 'सृजनात्मक विनाश' की ओर अग्रसर हैं।

18. यह ठप्पा लगने के जोखिम के बावजूद मैं यह कहता हूं कि रिज़र्व बैंक में हमें 'वैश्विक सोच और स्थानीय कार्य' करने की जरूरत है। विचार वैश्वीकरण से लड़ने का नहीं है, बल्कि देश के सबसे अच्छे लाभ के लिए इसका प्रबंध करना है। महात्मा गांधी ने कहा था (जिसमें मैं उद्धृत कर रहा हूं) ''मैं अपने घर के चारों ओर दीवार खड़ी और खिड़कियों को बंद नहीं करना चाहता। मैं चाहता हूं कि दुनियाभर की संस्कृति मेरे घर के पास से यथासंभव स्वतंत्र रूप से बहे। लेकिन मैं किसी के भी साथ बहने के लिए इनकार करता हूं''। महात्मा गांधी का यह उपदेश जिस समय कहा गया था उससे आज अधिक प्रासंगिक है।

19. हमें दुनिया की बेहतरीन चीजों से सीखने की जरूरत है लेकिन हमें अपनी सीख को परिपक्व और उभरती अर्थव्यवस्था कर मांग और संस्कृति के अनुकूल बनाना है। हमें आवरण को लगातार धकलते रहने की जरूरत है जो भले ही डोमेन जानकारी की सरहद हो, कभी कभी पुनर्कल्पना करनी है लेकिन उभरती बाज़ार अर्थव्यवस्था की प्रमुख चिंताओं के प्रति हमेशा संवेदनशील रहना है जो अभी भी करोड़ों गरीब लोगों का घर है।

20. रिज़र्व बैंक के लिए तीसरी बड़ी चुनौती है - वित्तीय समावेशन को व्यापक और गहन करना। हम सभी अपने व्यक्तिगत अनुभव से जानते हैं कि आर्थिक अवसर वित्तीय अभिगम से सुदृढ़ रूप से अंतर-युग्म हैं। ऐसा अभिगम विशेषकर गरीबों के लिए शक्तिशाली है क्योंकि यह उनको बचत करने, निवेश करने, ऋण लेने और सबसे ज्यादा आय आघातों से स्वयं का बीमा कराने के अवसर प्रदान करता है। समग्र स्तर पर वित्तीय समावेशन गरीबों की विशाल बचत को औपचारिक वित्तीय मध्यस्थता प्रणाली में लाने और उसे अधिक जरूरत वाले निवेश तक पहुंचाने के लिए अवसर प्रदान करता है। हमारे दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुंचने के कार्यक्रम से एक बड़ा निष्कर्ष यह निकला है कि वित्तीय समावेशन जनता के लिए अच्छा ही नहीं है बल्कि गुणवान भी है। यह गरीब लोगों को विभिन्न प्रकार से शक्ति प्रदान करता है। यदि समावेशी विकास करना है तो वित्तीय समावेशन एक बड़ा विचार है क्योंकि यह विकास और इक्विटी दोनों को तत्काल बढ़ावा देगा।

21. रिज़र्व बैंक के लिए अंतिम चुनौती अधिक पारदर्शक और संवेदनशील संस्था बनना है। हम एक लोक संस्था हैं और हम पर आधुनिकतम स्तर की गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदान करने की बाध्यता है। हमें लोगों को सुनने की जरूरत है, उनकी चिंताओं के प्रति संवेदनशील बनना है और उनकी शिकायतों का निवारण करना है। हमें प्रभावी और विश्वसनीय ढंग से संप्रेषण करने की जरूरत है तथा हमारे निर्णयों

और कार्यों के तकनीकी और गैर-तकनीकी, दोनों स्तरों पर तर्क स्पष्ट करना है। स्पष्ट रूप से संप्रेषण करने में समर्थ होना कई प्रकार से एक बड़ा कार्य है। 'केंद्रीय बैंक बोलता है' वह भाषा जो केंद्रीय बैंकर बोलते हैं, को यदि विवेकपूर्ण ढंग से प्रयुक्त नहीं किया गया तो यह प्रति-उत्पादक हो सकती है। हम सब एलन ग्रीनस्पेन को जानते हैं जो फेड के अध्यक्ष हैं। उन्हें अपनी भावी पत्नी के सामने विवाह का प्रस्ताव सात बार रखना पड़ा था क्योंकि वह वास्तव में उसके सामने प्रस्ताव रख रहा है, उसको वह समझ ही नहीं पाई थी।

भारत की सोच

22. अपनी बात समाप्त करने से पहले अंतिम विचार। वित्तीय संकट से प्रभावशाली सीख यह मिली है कि वित्तीय क्षेत्र का विकास अपने आप में अंत नहीं है और नहीं हो सकता है। वित्तीय क्षेत्र का विकास केवल उस हद तक महत्वपूर्ण है जब तक यह संपदा क्षेत्र के विकास में सुधार करता है। रिज़र्व बैंक में कार्यरत हम सब के लिए, असल में इसके बाहर वालों के लिए भी, जो वित्तीय क्षेत्र के मुद्दों से जुड़े हुए हैं, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि वित्तीय क्षेत्र में हम जो कार्य करते हैं उसका मूल्य तब ही होता है जब वह आम आदमी के जीवन में कोई अंतर लाता है। यह स्थायी संदेश है जिसे रिज़र्व बैंक प्लैटिनम जुबली समारोह के बाद भी आगे ले जायेगा।

23. प्रधानमंत्री महोदय, वर्ष 1994-95 के बजट भाषण में वित्त मंत्री के रूप में आपने प्रसिद्ध विक्टर हुगो को उद्धृत देते हुए कहा था कि 'दुनिया की कोई भी ताकत ऐसे विचार को नहीं रोक सकती जिसका समय आ गया है'। यदि हमारे प्रथम प्रधानमंत्री पं.नेहरु ने 'भारत की सोच' प्रदान की थी तो आपने भारत को पाशविक सोच से उन्मुक्त करने करने के लिए विचार की पुनर्कल्पना की। कीन्स की उद्यमवृति के संबंध में स्मरणीय सूक्ति है 'उठो और काम पर चलो'। राष्ट्र के रूप में भारत की सोच को आगे ले जाने का यह हमारा सामूहिक ख्वाब, आशा और खुशी है। भारतीय रिज़र्व बैंक अपनी प्लैटिनम जुबली के अवसर पर इस विचार को वास्तविकता में बदलने के लिए सतत रूप से कार्य करने के स्वयं को पुनः समर्पित करता है।